"जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

शिक्षा शास्त्र पी.एच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

जेवीएन प्रो. (डॉ.) मंजू शर्मा

शोधार्थी

जेवीएन सरोज मीणा

फैकल्टी ऑफ एज्यूकेशन मैथोडोलॉजी

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान), भारत

जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

1. शोध का परिचयः–

वर्तमान विश्व तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। नवीन सूचनाओं एवं ज्ञान से पूर्व पीढ़ी एक अद्‌भुत गति से आगे बढ़ रही है। मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने अनुभव किया है कि विद्यार्थियों में व्यक्तिगत भेद और विभिन्नतायें पाई जाती हैं। सभी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें व मूल्यों में विभिन्नताऐं पाई जाती हैं। वर्तमान समय में कोई भी विद्यार्थी या व्यक्ति विषय–विशेष में समान बुद्धिलब्धि व आदतें नहीं रखते हैं। विद्यार्थी का ज्ञान व सोच उसके वातावरण आवश्यकताओं, मूल्यों व आदतों को प्रतिबिम्बित करता है।

मूल्य एक प्रकार का मानक है कि मनुष्य किसी वस्तु या क्रिया विचार को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये या त्याग दे। जब कोई विचार व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है। मूल्य चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जब मूल्य को अंगीकृत कर ग्रहण कर लिया जाता है, तभी वह आदर्श बनता है।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता:–

मनुष्य को आदिम अवस्था से आज की प्रगतिशील अवस्था तक पहुंचने में उनके उपदानों का सहारा लेना पड़ा, उन सभी में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि है। राष्ट्र की सच्ची शक्ति विद्यार्थी है क्योंकि आज का विद्यार्थी कल का भावी नागरिक है और उसी विद्यार्थी को शिक्षा सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत बनाती है। शिक्षा का महत्व मानव सभ्यता के सतत् विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योग है। शिक्षा सम्बल है, जिसके आधार पर व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का चहुंमुखी विकास होता है। यह मानव की आकांक्षाओं को जगाती है एवं पूरा करने में सहायता प्रदान करती है। यह मानव को उसके अतीत से परिचित कराती है। वर्तमान में जीवन जीने की कला सिखाती है एवं भविष्य का निर्माण करने की क्षमता विकसित करती है।

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो लोगों को अज्ञान के अंधेरे से, कर्मकाण्ड से, विवेक से मुक्त कर समाज को परिवर्तित कर सकती है। शिक्षा विचार, व्यवहार व कार्य में तर्क के प्रयोग की योग्यता उत्पन्न करती है। शिक्षा समाज में जीवन मूल्यों एवं उचित व्यवहार की स्थापना कर मानवता के आदर्श का संपोषण करती है। बालकों को ज्ञान प्राप्त करने और अपनी बुद्धि का विकास करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है।

शिक्षा के द्वारा बालक और बालिकाओं में विचार शक्ति, समस्या समाधान, बौद्धिकता, प्रतिभा कुशलता तथा उत्तम मूल्य इत्यादि विकसित होते हैं।

प्राचीन काल में लोग सादा जीवन, उच्च विचार रखते थे। जीवन सादा एवं विचार उच्च रखने से वसुधैव कुटुम्बकम् तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी। लोग दूसरों के हित के लिए सोचते थे और धीरे–धीरे समय परिवर्तित होने लगा। समय के साथ लोगों की जरूरतें, मानसिकता तथा विचारों में बदलाव आने लगे। समय के साथ–साथ शिक्षण व्यवस्थाऐं, शैक्षिक तकनीकी में बदलाव आने लगे। विद्यार्थी गुरूकुल पद्धति से आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। कम्प्यूटर उपग्रह संचार ने विद्यार्थी की अध्ययन आदतों व जीवन मूल्यों को लाना प्रारम्भ किया। आज का विद्यार्थी डिजिटल क्रांति के साथ नवीन विचारों अवधारणाओं को अपना रहा है। शोधकर्मी ने इन्हीं विचारों को जानने के लिए कि क्या सभी विद्यार्थी अध्ययन आदतों व मूल्यों की दृष्टि से भिन्न अवधारणा रखते हैं, के लिए शोध समस्या को हल करने का लघु प्रयास करने की चेष्टा की है।

3. शिक्षा की परिभाषाऐंः–

शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रकिया है जो एक व्यक्ति के अन्तर्निहित व जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है और सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने योग्य बनाती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसारः—

शिक्षाः मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

महात्मा गांधी जी के अनुसारः—

शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से जो बालक और मनुष्य के शरीर, आत्मा और मन का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके।

4. शोध समस्याः—

जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

5. तकनीकी शब्दावलीः—

अध्ययन आदतेंः—

आदतों से तात्पर्य किसी कार्य को स्थायी रूप से करना है। यह चेतना स्तर से प्रारम्भ होकर बार—बार अभ्यास के कारण स्वतः संचालित होने लगती है। आदतें सीखने में महत्वपूर्ण हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार विद्यार्थी की अध्ययन आदतें उसके जीवन को प्रभावित करती हैं। इस कारण प्रत्येक स्तर पर चाहे वह विद्यार्थी का प्राथमिक स्तर हो या माध्यमिक, उसे अध्ययन आदतों के स्तर में श्रेष्ठता लाने का प्रयास करते रहना चाहिए।

मूल्यः—

मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज में मानव की प्रगति के लिए मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यों के अभाव में मानव अपना विकास नहीं कर पाता है। मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है— गुड एवं हॉट

मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है— आलपोर्ट

जीवन मूल्य ओस की बूंदों के सदृश्य नहीं है जो मौसम के अनुसार दिखाई दे। इसकी जड़ें प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी होती हैं तथा इसका वास्तविकता से गहरा संबंध है।

6. **शोध विधिः—**

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुसंधान में कई प्रकार की अध्ययन विधियां प्रचलित हैं जिनका प्रयोग शोधकर्ता अपनी—अपनी समस्या के अनुरूप करता है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि आधुनिक समाज में विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार का व्यवस्थित प्रयास है जिसमें सामाजिक संस्थाओं के स्तर का समूह

अथवा क्षेत्रों के संबंध में विवेचना व्याख्या आदि से संबंधित बातों का उल्लेख किया जाता है।

न्यादर्श:–

अनुसंधान परिणामों की विश्वसनीयता अनुसंधान के न्यादर्श पर निर्भर करता है। न्यादर्श प्रत्येक अनुसंधान कार्य की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी, अनुसंधान के परिणाम भी उतने की विश्वसनीय एवं सुदृढ़ होंगे।

"एक न्यादर्श विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि होता है।"

-"गुड एवं हॉट"

"एक न्यादर्श अपने समस्त समूह का एक लघुचित्र है।"

-"पी.वी. यंग"

"एक न्यादर्श समग्र का वह अंश है, जिसका चयन अनुसंधान के उद्‌देश्य के लिए किया जाता है।"

-"सिम्प्सन एवं काप्का"

कुल न्यादर्श:-

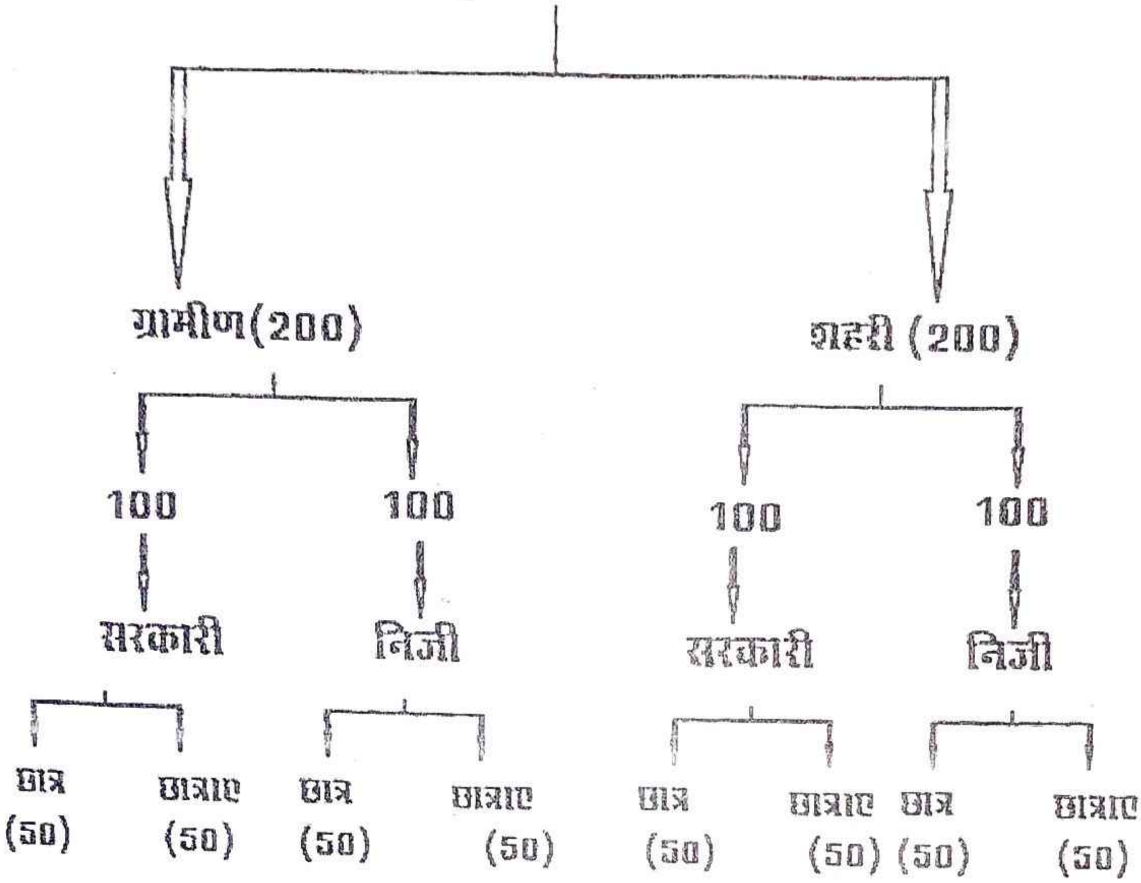

7. शोध के चरः–

शोधकर्ता अपनी समस्या से संबंधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना आंकिक मूल्य रखने वाले गणों, विशेषता या योग्यता का मापन करता है, यह गुण विशेषता योग्यता ही चर कहलाता है।

चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य हैं।

-"कर लिंगर"

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है:–

1. **स्वतंत्र चर:–** स्वतंत्र चर वह चर है जिसकी उपस्थिति अथवा उसमें होने वाला परिवर्तन किसी अन्य चर को प्रभावित करता है। अध्ययन आदतें व मूल्य प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर हैं।
2. **आश्रित चर:–** आश्रित च रवह चर है जिसे स्वतंत्र चर के प्रत्युत्तर में ग्रहण किया और मापा जाता है। आश्रित चर का मान स्वतंत्र चर के मान पर निर्भर करता है।

प्रस्तुत शोध में:– उच्च माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाऐं आश्रित चर हैं।

8. शोध के उद्देश्य:– मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्देश्य का निर्धारण करता है, उद्देश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते हैं तथा परिश्रम व धन व्यय हो जाता है अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्देश्य का निर्धारण किया है:

1. जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
2. जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य का अध्ययन करना।

3. जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों के बालक–बालिकाओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के बालक–बालिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

10. परिकल्पना:—

प्रेषित तथ्यों की व्याख्या करने के लिए या घटनाओं की भविष्यवाणी करने के लिए परिकल्पनाओं के बिना न ही कोई प्रयोग संभव हो सकता है और न ही वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही संभव है। वास्तव में परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन प्रक्रिया है।

परिभाषाऐं:— "परिकल्पना परीक्षण के लिए प्रस्तुत की गई एक प्रस्थापना है।" परिकल्पना एक ऐसी प्रस्थापना है जिसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी परीक्षा की जाती है।

शोध कार्य की परिकल्पनाऐं:—

- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की बालक बालिकाओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक शहरी विद्यालयों के बालक और बालिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

11. अध्ययन में अपनायी जाने वाली विधिः–

विधिः–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि अपनायी जायेगी। शोध अध्ययन के लिए आंकड़े एकत्रित करने हेतु छात्रों के परीक्षण हेतु सर्वे किया जायेगा। परीक्षणों में प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से विश्लेषण करके अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

12. अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़े

13. शोध का परिसीमनः

- प्रस्तुत शोध कार्य को जिला जयपुर (राजस्थान) के उच्च माध्यमिक स्तर के 50 शहरी व 50 ग्रामीण विद्यालयों तक सीमित रखा जायेगा।
- शोध कार्य में 100 बालक और 100 बालिकाओं का चयन किया जायेगा।

14. अध्ययन में अपनायी जाने वाली विधिः–

- प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि अपनायी जायेगी।
- शोध अध्ययन के लिए आंकड़े एकत्रित करने हेतु।
- छात्र परीक्षण हेतु सर्वे किया जायेगा।
- परीक्षणों में प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से विश्लेषण करके अध्ययन आदतों व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

15. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणः–

- व्यक्तिगत आंकड़े प्रपत्रः इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत जानकारी ली जायेगी।
- आर.के. ओझा एवं एम. भार्गव का मूल्य परीक्षणः इसमें बालक और बालिकाओं के मूल्य का अध्ययन किया जायेगा।

16. आंकड़ों का विश्लेषणः–

- आंकड़ों के विश्लेषण में सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

- अग्रवाल, संध्या; "**शिक्षा मनोविज्ञान**", विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, 2005
- भार्गव महेश;"**मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन**", हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा, 1997,
- भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षी;"**भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास**", आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2006
- भटनागर सुरेश;"**अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार**", इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2005
- भटनागर सुरेश; "**शिक्षा मनोविज्ञान**", आर.लाल बुक डिपो, मेरठ 2008
- बेस्ट जॉन डब्ल्यू; "**"रिसर्च इन एजूकेशन**", प्रेक्टिस हॉल, (इंक) ऐंगिल बुक क्लिफस,यू.एस.ए., 1958
- बोर्ग डेलनपेन;"**अण्डर स्टेडिंग एजुकेशन रिसर्च**", मेक्ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1958
- दत्ता संजय; "**शिक्षा–मनोविज्ञान में अधिगम एवं व्यक्तित्व**", जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर, संस्करण–2005
- फ्रेड़रिक एल. विहटनी;"**दि एलीमेन्टस ऑफ रिसर्च**", एशिया पब्लिशिंग हाउस, न्यूयार्क, 1961

- गुडे एवं हॉट;**"मैथडस इन सोशल रिसर्च"**, मेग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1962,
- गुड, वी. कार्टर और स्केट्स डी.ई.;**"मैथड्स ऑफ रिसर्च"**, एप्लटन सेन्चुरी क्राफ्टस (इंक), न्यूयार्क, 1954.
- कपिल एच.के.;**"अनुसंधान विधियाँ"**, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, 1998
- कपिल एच.के.;**"सांख्यिकी के मूल तत्व"**, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2007
- करलिंगर एफ.एन.;**"फाउंडेशन ऑफ बिहेवरियल रिसर्च"**, सेन्चुरी क्राफ्ट, न्यूयार्क, 2002
- कुलश्रेष्ठ एस.पी.; **''शिक्षा मनोविज्ञान''**, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2008
- क्रेच एवं क्रचफील्ड;**"थ्यौरी एण्ड प्राब्लम्स ऑफ सोशल साइकोलॉजी"**, मैग्राहिल पब्लिकेशन, न्यूयार्क 1948
- लुण्डबर्ग;**"सोशल साइकोलोजी"**, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1962
- मंगल अंशु बरौलिया, ए. अग्रवाल;**''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी''**, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा, 2007
- मेकेगुइन, एफ.जे.;**"एक्सपेरीमेंट्स साइकोलोजी"**, प्रेक्टिस हॉल ऑफ प्रा.लि., 1969

- जे. एस. राजपुताना ;**एनसाइक्लों पीडिया ऑफ इण्डियन एजूकेशन,** वॉल्यूम–I, 1990
- समलोक रोलो ;**शोध प्रबन्ध, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,** एन.सी.ई. आर.टी. एब्स्ट्रेक्ट–II, 1995
- सिढाना अशोक व पारिक : '**शोध कार्य**', **राज विश्वविद्यालय** एन.सी. ई.आर.टी. एब्स्ट्रेक्ट–III, 1996
- सैनी प्रीति;''**नई शिक्षा**'', अप्रैल–मई 2006
- एनवाइरमेन्टल जस्टिस इन इंडिया;''**प्रतियोगिता दर्पण**'', उपकार प्रकाशन, आगरा, अक्टूबर 2006
- **नेचर एनवाइरमेन्टल और पोलुशन टेक्नोलॉजी,** टेक्नों सांइस पब्लिकेशन्स, वाल्यूम–4, दिसम्बर, 2008,
- **स्कूल सांइस,** वाल्यूम–4, नं. 1, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, मार्च 2007

वेबसाईट

www.shodganga.com

www.article.com